पार्श्वनाथ विद्याश्रम व्याख्यानमाला पुष्प—१

प्राकृत भाषा

[पार्श्वनाथ विद्याश्रम द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला मे हिन्दू यूनिवर्सिटी मे दिए गए तीन व्याख्यान]

व्याख्याता

प्रबोध बेचरदास पंडित M A , Ph D (London)

सस्कृताध्यापक, ला० द० आर्ट्स कालेज और म० ग०

साइन्स इन्स्टीट्यूट, अहमदाबाद

श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम

बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी

बनारस–५

प्रकाशक
पार्श्वनाथ विद्याश्रम
बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी

१९५४
डेढ़ रुपया

मुद्रक
शारदा मुद्रण
बनारस।

प्रकाशक की ओर से

श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम की बहुविध प्रवृत्तिओ मे एक यह भी योजना थी कि हिन्दू यूनिवर्सिटी मे समय समय पर विशेषज्ञो के द्वारा जैनधर्म और प्राकृत भाषा से संबद्ध विषयो की व्याख्यानमाला का आयोजन हो। तदनुसार प्रथम व्याख्यानमाला का आयोजन सितम्बर १९५३ मे हुआ और डा० प्रबोध पडित Ph D के प्राकृतभाषा के विषय मे तीन व्याख्यान हिन्दू यूनिवर्सिटी के भारती महाविद्यालय मे हुए। उन व्याख्यानो को प्रस्तुत पुस्तिका के रूप मे प्रकाशित करते हुए परम हर्ष हो रहा है। यह कहने की आवश्यकता नही है कि जबतक प्राकृत भाषा के अध्ययन को गति नही मिलेगी तब तक सस्कृत कुल की भारत की आधुनिक भाषाओ का अध्ययन भाषादृष्टि से अधूरा ही रहेगा। प्रस्तुत व्याख्यानो मे डा० प्रबोध पडित ने प्राकृत भाषा के विकास की कथा अतिसक्षेप मे दी है। उनकी मातृभाषा गुजराती होते हुए भी उन्होने राष्ट्रभाषा हिन्दी मे ही व्याख्यान दिए है। इससे हिन्दीभाषी विद्वानो का ध्यान यदि प्राकृत भाषा के विशेषाध्ययन की ओर आकृष्ट हुआ तो उनका श्रम सफल होगा।

व्याख्यानमाला के लिए डा० प्रबोध पंडित अहमदाबाद से बनारस आए, डा० राजबली पाण्डेय ने व्याख्यानमाला की आयोजना अपने भारती महाविद्यालय मे की, डा० वासुदेव शरण अग्रवाल, डा० टी० आर० वी० मूर्ति तथा डा० राजबली पाण्डेय ने व्याख्यानो के अवसर पर अध्यक्षपद को सुशोभित किया—एतदर्थ इन सब विद्वानो का मै आभारी हूँ। पार्श्वनाथ विद्याश्रम के उत्साही मंत्री श्री हरजसरायजी जैन के सपूर्ण सहकार के विना यह आयोजन सभव ही नही था अतएव उनको भी धन्यवाद देता हूँ।

दलसुख मालवणिया

सचालक,

पार्श्वनाथ विद्याश्रम व्याख्यानमाला

बनारस यूनिवर्सिटी

ता० २७-४-५४

निवेदन

ये व्याख्यान सितम्बर १९५३ मे पार्श्वनाथ विद्याश्रम के उपक्रम से कॉलेज ऑव् इन्डोलोजी, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी मे जैसे दिए गए थे वैसे ही छपे है। मेरी मातृभाषा गुजराती है, और मेरी हिन्दी मे जो कुछ गलतियाँ रह गई हो उसे जैसे श्रोताजनो ने क्षन्तव्य गिनी थी वैसे पाठकजन भी गिनेगे ऐसी आशा है। व्याख्यानो मे जो कुछ कमी हो या त्रुटि हो उसकी ओर मेरा ध्यान खीचने की पाठकजन से विनति है।

व्याख्यानो की पाडुलिपि देख कर हिन्दी सुधारने के लिए मै प्राध्या० रणधीर उपाध्याय एम० ए० साहित्यरत्न का और व्याख्यानो की छपाई मे परिश्रम करने के लिए प्राध्या० दलसुख मालवणिया का मै ऋणी हूँ।

प्रोफेसर्स क्वार्टर्स
अहमदाबाद—९
मे, १९५४

प्र० बे० पंडित